राजस्थान का एक प्राचीन तीर्थ जावर

—श्री रामवल्लभ सोमानी, जयपुर

जावर उदयपुर से डूंगरपुर के मार्ग से टीडी से १० कि० मी० दूर है। प्राचीन काल से ही यह स्थान जस्ते की खानों के लिये प्रसिद्ध रहा है। वि० सं० ७०३ के सामोली के शिलालेख के अनुसार वसंतगढ़ निवासी श्रेष्ठी जैतक व्यापार हेतु इस क्षेत्र में आया था। उस समय यहां जस्ता एवं चांदी बड़ी मात्रा में खानों से निकलती थी। इसीलिये यह क्षेत्र मेवाड़ के राजाओं के हाथ से छीनकर कुछ समय कल्याणपुर के गुहिलोत शासकों एवं बागड़ के अधीन भी रहा। मध्यकाल में महाराणा लाखा ने इसे जीताया। उसके लिए मेवाड़ के शिलालेखों में योगिनीपुर जावर को जीतने का लिखा है। वि० सं० १४६२ के एक ताम्रपत्र के अनुसार महाराणा लाखा ने देवी के मंदिर के निमित्त २ टंका दिये थे।[१] महाराणा लाखा के ही राज्य का उल्लेख वि० सं० १४६४ की मलयगिरि की सप्तति टीका की प्रशस्ति के श्लोक १२ में है।[२] इस प्रशस्ति में एक महत्त्वपूर्ण सूचना यह भी है कि श्रेष्ठी कान्हा ने वीर विहार नामक जैन मंदिर बनवाया था। यह परिवार देलवाड़ा (मेवाड़) का रहने वाला था एवं व्यापार हेतु डूंगरपुर एवं जावर में भी रहता था। वीर-विहार में खरतरगच्छ की पिप्पलिका शाखा एवं जिनभद्रसूरि की मुख्य शाखा के साधुओं के भी अप्रकाशित लेख हैं जिनका उल्लेख आगे किया जा रहा है।

यहां का मुख्य मंदिर शांति जिनालय है। यह अब भग्न है। इसका निर्माण वि० सं० १४७८ में श्रेष्ठी धनपाल ने किया है।[३] जिसके लिये शिलालेख में 'श्री शत्रुञ्जय-गिरनार-अर्बुद जीरापल्ली-चित्रकूटादि तीर्थ यात्रा कृता श्री संघ मुख्य' लिखा है। यह शिलालेख लम्बा एवं ऐतिहासिक महत्व का है। इसमें प्रारम्भ में 'संवत १४७८ वर्ष पौष शु० ५ राजाधिराज श्री मोकलदेव विजयराज्यो' शब्द है। इससे इस बात की पुष्टि होती है कि यह उस समय मेवाड़ राज्य में सम्मिलित था। इसकी प्रतिष्ठा तपागच्छ के सोमसुन्दर सूरि ने की थी। सोम सौभाग्य काव्य में दिये गये वर्णन के अनुसार सोमसुन्दर सूरि मेवाड़ में देलवाड़ा एवं चित्तौड़ कई बार पधारे थे। गोड़वाड़ जिनमें राणकपुर भी सम्मिलित है इनका कार्य-क्षेत्र था। जावर के इस लेख में तपागच्छ के मुख्य साधुओं के नाम हैं जो इस प्रतिष्ठा के समय वहां उपस्थित थे। यथा—मुनि सुन्दर, जयचंद्र, भुवन सुन्दर, जिन सुन्दर, जिनकीर्त्ति विशाल राज, रत्नशेखर उदयनन्दि, महोपाध्याय सत्यशेखर, सुरसुन्दर, सोमदेव आदि। इतने मुख्य साधुओं के एक साथ होने से पता चलता है कि यह प्रतिष्ठा काफी विशाल स्तर पर हुई थी। इस मंदिर का वर्णन कवि लावण्य समय विरचित सुमति साधु सूरि विवाहलो में किया गया है। इसमें लिखा है कि नगर के मध्य अत्यन्त सुन्दर शांतिजिन विहार है (नगर विचिहिं अति रुअ डलउ शांति जिणंद विहार रे)। श्रेष्ठी कान्हा द्वारा वि० सं० १४८६ में देवकुलिका बनाई गई थी जिसका सूत्रधार सहदेव था।[४] इसी

[१] लेखक की कृति हिस्ट्री ऑफ मेवाड़, पृ० ११२।

[२] एल० डी० इन्स्टिट्यूट, अहमदाबाद द्वारा हस्तलिखित ग्रंथों की सूची भाग ४ के अंत में पृ० ६२ पर दी गई प्रशस्ति।

[३] विजयधर्म सूरि, जैन लेख संग्रह, भाग १, सं० १४३।

[४] एन्यूअल रिपोर्ट आन इंडियन एपिग्राफी, वर्ष ५६-५७, सं० ५१७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिथि के एक अन्य लेख में इसी मंदिर में जिन सागर सूरि का नाम दिया है।[५] ये लेख मूल रूप से मैं देख नहीं सका हूँ किन्तु संभवतः किसी खरतरगच्छ से सम्बन्धित मंदिर के ये लेख रहे होंगे। जिनभद्रसूरिजी ने जावर में खरतरगच्छ का मंदिर बनवाया था संभवतः ये लेख उसी मंदिर के खंडहर के हों।

वि० सं० १४७८ के बाद खरतरगच्छ के कई लेख यहाँ से मिले हैं। वि० सं० १४८६ के लेख में श्री कान्हा श्रेष्ठी द्वारा बनाये वीर विहार में सुपार्श्वनाथ देवकुलिका की प्रतिष्ठा श्री जिनसागर सूरि (पिप्पलिका शाखा, खरतरगच्छ) द्वारा कराये जाने का उल्लेख है। लेख इस प्रकार है—'संवत् १४८६ फा० शु० ३ दिने ऊकेश जातीय सा० पद्मा भार्या पदमादे पुत्र गोइद भार्या गउरदे सुत सा० आंबा सा० सांगण, सहदेव, सन्मध्ये सहदेव भार्या पोई पुत्र श्रीधर ईसर पुत्री राजि प्रभृति कुटुम्ब युतेन भं० कान्हा कारित प्रासादे स्व श्रेयोर्थं श्री सुपार्श्वजिनयुत देव कुलिका कारिता प्रतिष्ठिता श्री खरतरगच्छाधीशेन श्रीजिन-सागर।' इसी मंदिर में वि० सं० १५०४ का एक लेख और है। इसमें खरतरगच्छ के जिनभद्रसूरि के आम्नाय के साधओं के नाम हैं। मूल लेख इस प्रकार है—'संवत् १५०४ वर्षे कार्त्तिक वदी १३ दिने श्री जावपुर नगरे श्री खरतरगच्छे श्री जिनभद्रसूरिगच्छाधिराजादेशे भं० कान्हेन कारित श्री वीर-विहारे प० भानुप्रभगणि, समयप्रभगणि सोमधीर मुनिः अहर्निसं (शं) श्री वीर चरणं प्रणमति बहुभक्त्या सूत्रधारो लोंका महावीर चरणाय नमः।'

जिनभद्रसूरि ने जावर में मंदिर बनाने के लिए संभवतः किसी श्रेष्ठी को निर्देश दिये थे। इसका स्पष्ट उल्लेख वि० सं० १४९७ के संभवनाथ मंदिर, जैसलमेर के इस लेख में है।[६] यथा 'श्री उज्जयंताचल चित्रकूट मांडव्य पूर्जावर मुख्यकेषु स्थानेषु येषामुपदेश वाक्या निर्मापिताः श्राद्धवरैर्विहारा।' खरतरगच्छ के कुछ साधु वि० सं० १४९२ में आये थे।[७] इनके नाम हैं क्षमामूर्ति, विवेकहंस, उदयशील, मेरु कुंजर आदि। वि० सं० १४९४ का एक अन्य लेख एक खंडित मंदिर के स्तम्भ पर है। लेख बहुत घिस गया है। इसमें 'वि० सं० १४९४ माघ सुदि १३ महावीर चैत्ये···खरतरगच्छे जिनसागर सूरिभिः' पाठ पढ़ा जाता है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि महावीर की प्रतिमा की प्रतिष्ठा उस समय की गई थी। मूर्ति पर भी लेख है और एक अन्य लघु लेख में श्री जिनकुंजर सूरिभिः नाम दिया हुआ है। वि० सं० १४९५ के एक लेख में धर्मघोष गच्छ के हरिकलश आदि के नाम हैं।[८] वि० सं० ज्येष्ठ शु० ५ के एक लेख में रामचन्द्र सूरि का नाम है।

एक उन्नतिशील नगर होने के कारण बागड़ और मेवाड़ के शासकों के मध्य यह विवाद का विषय बना हुआ था। महाराणा कुंभा ने इसे जीता था। इसके लेखों में जावर को जीतने का उल्लेख है (योगिनी पुरम जेयमप्यसौ योगिनी चरण किंकरो नृपः)।[९] राजस्थानी की गीतगोविन्द की टीका की प्रशस्ति में 'योगिनी भणीये महामाया तेहनो प्रासाद पाम्बो योगिनीपुर जावर' पाठ सुधा के लिये प्रयुक्त हुआ है। ऐसा लगत है कि महाराणा के अन्तिम दिनों में मालवे के सुल्तान मोहम्मद खिलजी ने जावर पर आक्रमण कर यहाँ के देवी के मंदिर को नष्ट कर दिया था। अतः कुंभा ने इसे वापस जीर्णोद्धार कराया। यहाँ के जैन मंदिरों का भी महत्त्व अत्यधिक था। वि० सं० १५०८ में नाडोल में तपागच्छ के रत्नशेखर सूरि ने श्रेष्ठी जगसी परिवार द्वारा एक विशाल प्रतिष्ठा समारोह कराया था। इस अवसर पर प्रतिष्ठित प्रतिमायें चोपानेर, चित्रकूट, जावर, कायंद्रा, नागदा ओसिया, नागोर कुंभलगढ़ आदि स्थानों पर भेजी थी।[१०] इस प्रकार से भेजी गई प्रतिमाओं में कुंभलगढ़

५ उपरोक्त, सं० ५२२।
६ जैन लेख संग्रह, भाग ३ (पूरणचंद नाहर द्वारा सम्पादित), लेख सं० २१३०।
७ लेखक की कृति जैन इन्स्क्रिप्शन्स आफ राजस्थान, पृ० १३१।
८ उपरोक्त।
९ लेखक की कृति महाराणा कुम्भा, पृ० ९८।
१० जिन विजय, जैन लेख संग्रह, भाग २, सं० ३७२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में नीलकंठ मंदिर के पास छोटे जैन मंदिर में यह मूर्ति अब भी विद्यमान है। जावर में भी यह मूर्ति उपलब्ध है।

तपागच्छ के रत्नशेखर सूरि से सम्बन्धित सुमति साधु विवाहलो में एक घटना वर्णित है। इसके अनुसार जावर के निवासी गणपति शाह के एक पुत्र नयराज हुआ। इसने रत्नशेखर सूरि से दीक्षा ग्रहण की। गुरु गुण रत्नाकर काव्य में भी रत्नशेखर सूरि के जावर पधारने का उल्लेख है (श्री भेद पाट पृथिवीमुकुटाभ मज्जा पद्रभिधान नगरं समहं समीपुः १०७ श्लोक)।[११] उक्त विवाहलो में प्रारम्भ में इस नगर का सुन्दर वर्णन है। इसके अनुसार इस नगर में धातु की सात खाने थीं (सातइ धातु नई आगरु)। वि० सं० १७४६ की शीलविजय की तीर्थ माला में भी यहाँ सात धातु की खाने होने का उल्लेख किया हुआ है (सात धातु तणुअहिठाणं)। सुमति साधु विवाहलो में जावर का प्रारम्भ में जो वर्णन दिया गया उसके अनुसार यहाँ काफी समृद्धि थी।[१२] आसपास कई तालाब बनाये गये थे। इस नगर में कई उल्लेखनीय श्रेष्ठी रहते थे एवं अच्छा बाजार था।

महाराणा कुम्भा के बाद महाराणा उदा शासक हुआ। उसे हटाकर कुंभा का दूसरा पुत्र रायमल शासक हुआ। रायमल ने जावर अपनी बहिन रमाबाई को जागीर में दिया था। इसका विवाह गिरिनार के शासक चूड़ा समा राजा मंडलीक के साथ हुआ था। इसके मोहम्मद बेगड़ा से हारने के बाद मुस्लिम धर्म स्वीकार कर लेने से रमाबाई मेवाड़ में आ गई थी तब उसे जावर दिया था। यहाँ से वि० सं० १५५४ का एक विस्तृत शिलालेख मिला है।[१३] इसके अनुसार इसने कुंभलगढ़ में दामोदर मंदिर, एक सरोवर एवं जावर में रमा स्वामी का मंदिर बनाया था।

जावर के निवासी ओसवाल सूरा ने नाणा (गोड़वाड़) में पार्श्वनाथ की मूर्ति वि० सं० १५७२ में स्थापित की थी। जावर में वि० सं० १५८० की १२वें किताबों की एक सुरह है जो काफी घिसी हुई है। इसमें सबसे ऊपर श्री रषबदेव प्रसादात् शब्द होने से यह जैनधर्म से सम्बन्धित है। इसमें कई नाम हैं। यथा देपा, जुपा, नरा, पेथोली, वीरम नाथा, उदा व मंगरा का समस्त संघ का उल्लेख है। उसमें महाराणा सांगा का नाम होने से महत्वपूर्ण है। यह अभी अप्रकाशित है। वि० सं० १५९७ का एक लेख बनवीर का भी यहाँ से मिला है। महाराणा प्रतापसिंह के समय की एक ग्रंथ प्रशस्ति वि० सं० १६४३ की मिली है। इसमें साधु दिन कृत्य की प्रतिलिपि जावर में करने का उल्लेख है (संवत् १६४३ वर्षे आश्विन वदि ४ सोमे श्री मेवाड़देशे राणा प्रतापसिंह राज्ये श्री जावरमध्ये जीराऊलीया कीका लिखितं)। अकबर के बाद जहाँगीर ने मेवाड़ में कई वर्षों तक निरन्तर आक्रमण किया। उस समय वहाँ के सारे देवालय भग्न कर दिये। मेवाड़ और मुगल सन्धि हो जाने के बाद मेवाड़ के सारे जैन व वैष्णव मन्दिरों का व्यापक जीर्णोद्धार हुआ था। वि० सं० १६९४ में यहाँ के जैन मंदिर जीर्णोद्धार का लम्बा लेख है। लेख का कुछ अंश इस प्रकार है: 'संवत् १६९४ वर्षे शाके १५६० प्रवर्तमाने वैशाख मासे शुक्ल पक्षे तृतीया तिथौ शनिवासरे भेदपाट-देशे महाराजाधिराज महाराणा श्री जगतसिंहजी विजयराणो कुमर श्री राजसिंह आदेशात् योगिनीपुर वरे श्री शांतिनाथ बिंब स्थापित य उधरी मोहण-सुत वीरजी पंचोली सवराम, दोसी सुजा तेलहरा धनजी सा० पंचाइण सा समरथ सा दशरथ मुंजावत महता केसर महता लधु चोखा उतवेला धना भा० साम पोरवाड समस्तसंघ उधरी मोहण प्रसाद उधराण कृतं प्रतिमा स्थापिता संघ पूजा कृत सलावट ताजु चद···।' वि० सं० १७२८ में जावर निवासी पंडित चतुराजी जो माड़ाहड़गच्छ के थे आबू में यात्राकर वहाँ लेख भी उत्कीर्ण कराया; संवत् १७२८ वर्षे वैशाख सुदि ११ दिने मड़ाहड़गच्छे पंडित चतरा जी यात्रा सफल वास जावर।

बहुचर्चित गीत गोविन्द की सचित्र प्रति की प्रतिलिपि

[११] गुरु गुण रत्नाकर, श्लोक १०१।

[१२] सुमति साधु विवाहलो की एक नकल स्व० अगरचंदजी नाहटा ने मुझे भिजवाई थी। यह वर्णन उसीके अनुसार है।

[१३] जावर का अभिलेख इंडियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली, वि० सं० १९५८, पृ० २१५-२२५ पर प्रकाशित है। वीर विनोद के पहले भाग में भी इसका मूल पाठ उपलब्ध है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६वीं शताब्दी में जावर में की गई थी। जावर से माता जी के मंदिर के आगे एक वि० सं० १६५५ आषाढ़ शुक्ल ६ की सुरह है। उसमें पेथोली माण्डण शाह भामा (प्रसिद्ध भामाशाह से भिन्न) आदि द्वारा कुछ 'चढ़ावा' करने का वर्णन है। अम्बा माता के अतिरिक्त दूसरे माताजी के मंदिर के पास महाराणा राजसिंह का एक लेख है यह बहुत घिस गया है, केवल इतना पढ़ा जाता है 'सिद्ध श्री गणेश गौत्र देव्या प्रसादात् महाराजाधिराज महाराणा जी श्री राजसिंहजी आदेशात जावर···।' पुरानी कचहरी के पास एक सुरह वि० सं० १८१५ की है। इसमें महाराणा राजसिंह के समय देपुरा सदाराम द्वारा तालाब में रमानाथ मंदिर में भूमिदान का उल्लेख है। रमानाथ मंदिर के स्तम्भों पर वि० सं० १७७६ का १४ पंक्तियों का लघु लेख है जिसमें हरिहर आदि के नाम हैं। इसी मंदिर के बाहर महाराणा भीमसिंह की सुरह लगी है। यह सारी मिट्टी में दब गई केवल 'सिध श्री महाराजाधिराज महाराणाजी श्री श्री श्री भीमसिंघ जी आदेसात् प्रतदवे पेथोली परताप' लिखा है।

ऐसा प्रतीत होता है कि मराठा काल में यह नगर उजड़ गया था। निरन्तर मराठों के आक्रमण से लोग गांव छोड़कर चले गये। अब नयी बस्ती बस गई है किन्तु ये मंदिर अब खंडहर हैं।

यह लेख जावर माइन्स के एक अधिकारी के आग्रह पर मैंने कई वर्षों पूर्व तैयार किया था। काफी सूचना श्री नाहटाजी से भी ली थी। जावर माइन्स के अधिकारियों ने घूमने एवं लेखों की प्रतिलिपि करने में सहायता दी थी। मैं इन सबका कृतज्ञ हूँ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org